विकारानुसार नामजप-उपचार

(देवताओंका जप, बीजमन्त्र, अंकजप इत्यादि)

भूमिका

ग्रन्थके इस भागमें ३०० से अधिक शारीरिक और मानसिक विकारोंपर विविध उपचारी नामजप एक ही दृष्टिक्षेपमें समझमें आएं, इसलिए सूचीके रूपमें दिए हैं । इनमें प्रमुखरूपसे देवताओंके नामजप हैं ।

मनुष्यकी देह पंचमहाभूतोंसे बनी होती है । इसलिए देहको होनेवाले विभिन्न विकार भी पंचतत्त्वोंसे सम्बन्धित होते हैं । देवताओंका कार्य सगुण और निर्गुण, दोनों स्तरोंपर होता है । देवताओंके निर्गुण स्तरके कार्यके सन्दर्भमें देवता पंचतत्त्वोंसे परे हैं; वहीं सगुण स्तरके कार्यके सन्दर्भमें वे पंचतत्त्वोंसे युक्त हैं । इसलिए प्रत्येक देवतामें पंचतत्त्वोंसे सम्बन्धित विकार दूर करनेका सामर्थ्य होता है । तब भी प्रत्येक विकारके लिए विशिष्ट देवताका नामजप देनेका एक विशेष कारण है । किसी एक देवतामें विद्यमान पंचतत्त्वोंमेंसे किसी एक तत्त्वकी अधिकताके कारण, वे देवता उस तत्त्वसे सम्बन्धित विकार अन्य देवताओंकी तुलनामें शीघ्र दूर कर सकते हैं ।

इस ग्रन्थमें अगले चरणके शब्दब्रह्म (गायत्री मन्त्रके शब्दोंके नामजप), अक्षरब्रह्म (देवताका तत्त्व / शक्तियुक्त अक्षरोंके नामजप), बीजमन्त्र और अंकजप भी दिए हैं । किसी व्यक्तिकी प्रकृति, पूर्वजन्म अथवा इस जन्मकी साधना, आध्यात्मिक स्तर आदिका विचार करनेपर उसके लिए अगले चरणका नामजप भी उपयुक्त सिद्ध हो सकता है ।

नामजप-उपचार अधिक प्रभावी होने हेतु की जानेवाली मुद्रा और न्यास की जानकारी तथा नामजपके लिए कैसे बैठें, नामजप भावपूर्ण होने हेतु क्या करें, आदि उपयुक्त सूचनाएं 'भाग २' में दी हैं ।

'नामजपके उपचार कर अधिकाधिक रोगी शीघ्र विकारमुक्त हों', यह श्री गुरुचरणोंमें चरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

१. नामजपके विविध प्रकारोंमेंसे स्वयंकी प्रकृतिके अनुसार अधिक उपयुक्त नामजपका चयन कैसे करें ? ११

२. विकारोंके अनुसार विविध नामजप, नामजपसे सम्बन्धित महाभूत (तत्त्व) और कुछ विशेष न्यासस्थान (विकारसूची) १५

२ अ. कुछ सूचनाएं १५

२ आ. विकारसूची १८

१. सिर एवं तन्त्रिकातन्त्र (मस्तिष्क, मेरुरज्जु व तन्त्रिकाएं) १८

२. नेत्र विकार २१

३. नाकके विकार २३

४. मुखके विकार २४

५. दांत और मसूडों के विकार २६

६. कानोंके विकार २७

७. गलेके विकार २८

८. रक्तपरिसंचरण तन्त्रके विकार २८

९. श्वसनतन्त्रके विकार २९

१०. पाचनतन्त्रके विकार ३१

११. मूत्रप्रणालीके विकार ३७

१२. प्रजननतन्त्रके विकार ३८

१३. अस्थि और स्नायु तन्त्र के विकार ४३

१४. त्वचाके विकार ४७

१५. केशके सर्व विकार ५०

१६. नखोंके विकार ५०

१७. रक्तके विकार ५०
१८. अन्त:स्रावी ग्रन्थियोंके विकार ५१
१९. ज्वर (बुखार) और संक्रमणजन्य विकार ५२
२०. विविध प्रकारकी गांठें और कर्करोग ५४
२१. शिशुओंके विकार ५५
२२. विषबाधा ५५
२३. दुर्घटना होना ५५
२४. अन्य शारीरिक विकार ५६
२५. मानसिक विकार ५८
२६. अन्य लक्षण अथवा विकार (शरीर और / अथवा मन से सम्बन्धित, तथा किसी भी अवयवमें उत्पन्न हो सकनेवाले लक्षण अथवा विकार) ६५
२७. अन्य ७१
२८. सर्व विकारोंका उपचार ७२

卐 **परिशिष्ट १ : कुछ विकार और आध्यात्मिक पीडाके निवारण हेतु नामजप आदी उपचार** ७३

स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया हेतु पूरक सनातनका ग्रन्थ !

अहं-निर्मूलनके लिए साधना

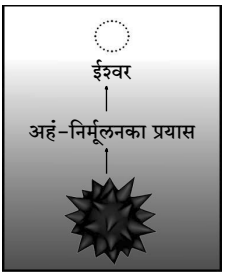

- अहंसे व्यक्तिके जीवनमें हानि कैसे होती है ?
- गुरुकृपायोगानुसार साधनासे 'अहं-निर्मूलन प्रक्रिया' शीघ्र कैसे होती है ?
- अहं कम होनेपर व्यक्तिमें आध्यात्मिक उन्नतिके कौनसे लक्षण दिखाई देते हैं ?
- नामजप, सेवा, शरणागतभाव आदि से अहं अल्प कैसे होता है ?